अध्याय 26

द्वितीय जनगणना

इस्राएल के द्वारा वायदे के देश की ओर अपनी यात्रा की तैयारी के बारे में बताने के बाद (अध्याय 1-10), गिनती की पुस्तक, कनान की सीमा की ओर उनकी यात्रा का वर्णन करती है और बताती है कि उस बिन्दु तक पहुँचने के लिए उन्हें चालीस दिन के स्थान पर लगभग चालीस वर्ष क्यों लगे (अध्याय 11-25)। इस पुस्तक के अन्तिम सात अध्याय (अध्याय 26-36) प्राथमिकता के साथ इस्राएल के कनान में प्रवेश के साथ जोड़ते हैं। इस्राएल यरदन के बिल्कुल पूर्व में मोआब के अराबा में छावनी किए हुए नदी पार करने और कनान को जीतने की बाट जोह रहा था। इन अध्यायों में वायदे के देश में इस्राएल की बसावट से सम्बन्धित व्यवस्था और आदेश शामिल हैं।

दूसरी गणना का एक विवरण गिनती के 26 अध्याय में दिया हुआ है। पहली गणना पूर्व में सिनई के पास लगभग अड़तीस वर्ष पूर्व आयोजित की गई थी (देखें अध्याय 1)। इस दूसरी गणना की आवश्यकता थी क्योंकि पहली पीढ़ी समाप्त हो गई थी और इसने यह निश्चित किया कि भूमि को बारह गोत्रों में बाँटा जाए। इसने एक नई शुरुआत की ओर भी संकेत दिया। 1 से 25 अध्याय में रिकॉर्ड की गई घटनाएँ अधिकतर पुरानी पीढ़ी से सम्बन्ध रखती हैं; 26 से 36 अध्याय ऐसे हैं जिनमें बताई गई घटनाओं में मात्र नई पीढ़ी शामिल की गई।

दूसरी जनगणना में, पहली जनगणना के अनुसार, प्रत्येक गोत्र के लिए "बीस वर्ष के, या उससे अधिक" (26:2, 4) के पुरुषों की संख्या की गिनती की गई और सब गोत्रों के लिए पुरुषों की कुल संख्या दी गई है (26:5-51)। इसके परिणाम ने यह प्रस्तुत किया कि जंगल में बिताए गए वर्षों में इस्राएलियों की संख्या पर्याप्त रूप से कम नहीं हुई थी। यह आवश्यक था कि गोत्रों के आकार को देखते हुए चिट्ठी डालने के द्वारा गोत्र सम्बन्धी बँटवारा किया जाए (26:52-56)। लेवियों की गिनती अलग से की गई (26:57-62)।

गिनती किया जाना (26:1-51)

1फिर यहोवा ने मूसा और एलीआज़ार नामक हारून याजक के पुत्र से कहा,
2"इस्राएलियों की सारी मण्डली में जितने बीस वर्ष के, या उससे अधिक अवस्था के होने से इस्राएलियों के बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरों के घरानों के अनुसार उन सभों की गिनती करो।" 3अत: मूसा और एलीआज़ार याजक ने यरीहो

के पास यरदन नदी के तट पर मोआब के अराबा में उन को समझाके कहा, 4“बीस
वर्ष के और उससे अधिक आयु के लोगों की गिनती लो, जैसा कि यहोवा ने मूसा
और इस्राएलियों को मिस्र देश से निकल आने के समय आज्ञा दी थी।”

5रूबेन जो इस्राएल का जेठा था; उसके ये पुत्र थे; अर्थात् हनोक, जिससे
हनोकियों का कुल चला; और पल्लू, जिससे पल्लूइयों का कुल चला; 6हेस्रोन,
जिससे हेस्रोनियों का कुल चला; और कर्मी, जिससे कर्मियों का कुल चला।
7रूबेनवाले कुल ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे तैंतालीस हज़ार सात सौ
तीस पुरुष थे। 8और पल्लू का पुत्र एलीआब था। 9और एलीआब के पुत्र नमूएल,
दातान, और अबीराम थे। ये वही दातान और अबीराम हैं जो सभासद थे; और
जिस समय कोरह की मण्डली ने यहोवा से झगड़ा किया था, उस समय उस मण्डली
में मिलकर वे भी मूसा और हारून से झगड़े थे; 10और जब उन ढाई सौ मनुष्यों के
आग में भस्म हो जाने से वह मण्डली मिट गई, उसी समय पृथ्वी ने मुँह खोलकर
कोरह समेत इनको भी निगल लिया; और वे एक दृष्टान्त ठहरे। 11परन्तु कोरह के
पुत्र नहीं मरे थे।

12शिमोन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् नमूएल, जिससे
नमूएलियों का कुल चला; और यामीन, जिससे यामीनियों का कुल चला; और
याकीन, जिससे याकीनियों का कुल चला; 13और जेरह, जिससे जेरहियों का कुल
चला; और शाऊल, जिससे शाऊलियों का कुल चला। 14शिमोनवाले कुल ये ही थे;
इनमें से बाईस हज़ार दो सौ पुरुष गिने गए।

15गाद के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सपोन, जिससे
सपोनियों का कुल चला; और हाग्गी, जिससे हाग्गियों का कुल चला; और शूनी,
जिससे शूनियों का कुल चला; और ओजनी, जिससे ओजनियों का कुल चला; 16और
एरी, जिससे एरियों का कुल चला; और अरोद, जिससे अरोदियों का कुल चला;
17और अरेली, जिससे अरेलियों का कुल चला। 18गाद के वंश के कुल ये ही थे; इनमें
से साढ़े चालीस हज़ार पुरुष गिने गए।

19यहूदा के एर और ओनान नामक पुत्र तो हुए, परन्तु वे कनान देश में मर
गए। 20और यहूदा के जिन पुत्रों से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शेला, जिससे
शेलियों का कुल चला; और पेरेस, जिससे पेरेसियों का कुल चला; और जेरह,
जिससे जेरहियों का कुल चला। 21और पेरेस के पुत्र ये थे; अर्थात् हेस्रोन, जिससे
हेस्रोनियों का कुल चला; और हामूल, जिस से हामूलियों का कुल चला। 22यहूदियों
के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े छिहत्तर हज़ार पुरुष गिने गए।

23इस्साकार के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् तोला, जिससे
तोलियों का कुल चला; और पुव्वा, जिससे पुव्वियों का कुल चला; 24और याशूब,
जिससे याशूबियों का कुल चला; और शिम्रोन, जिससे शिम्रोनियों का कुल चला।
25इस्साकारियों के कुल ये ही थे; इनमें से चौंसठ हज़ार तीन सौ पुरुष गिने गए।

26जबूलून के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सेरेद, जिससे
सेरेदियों का कुल चला; और एलोन जिससे एलोनियों का कुल चला; और यहलेल,
जिससे यहलेलियों का कुल चला। 27जबूलूनियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े साठ

हज़ार पुरुष गिने गए।
28यूसुफ के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे मनश्शे और एप्रैम थे। 29मनश्शे के
पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिससे माकीरियों का कुल चला; और माकीर से गिलाद
उत्पन्न हुआ; गिलाद से गिलादियों का कुल चला। 30गिलाद के पुत्र ये थे; अर्थात्
ईएजेर, जिससे ईएजेरियों का कुल चला; 31और हेलेक, जिससे हेलेकियों का कुल
चला और अस्रीएल, जिससे अस्रीएलियों का कुल चला; और शेकेम, जिससे
शेकेमियों का कुल चला; और शमीदा, जिससे शमीदियों का कुल चला; 32और
हेपेर, जिससे हपेरियों का कुल चला। 33और हेपेर के पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं,
केवल बेटियाँ हुईं; इन बेटियों के नाम महला, नोआ, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा
हैं। 34मनश्शेवाले कुल तो ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे बावन हज़ार सात
सौ पुरुष थे।
35एप्रैम के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शूतेलह, जिस से
शूतेलहियों का कुल चला; और बेकेर, जिससे बेकेरियों का कुल चला; और तहन,
जिससे तहनियों का कुल चला। 36और शूतेलह का यह पुत्र हुआ; अर्थात् एरान,
जिस से एरानियों का कुल चला। 37एप्रैमियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े बत्तीस
हज़ार पुरुष गिने गए। अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे।
38बिन्यामीन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् बेला जिससे
बेलियों का कुल चला; और अशबेल, जिससे अशबेलियों का कुल चला; और
अहीराम, जिससे अहीरामियों का कुल चला; 39और शपूपाम, जिससे शपूपामियों
का कुल चला; और हूपाम, जिससे हूपामियों का कुल चला। 40और बेला के पुत्र अर्द
और नामान थे; तथा अर्द से अर्दियों का कुल, और नामान से नामानियों का कुल
चला। 41अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे
पैंतालीस हज़ार छः सौ पुरुष थे।
42दान का पुत्र जिससे उनका कुल निकला यह था; अर्थात् शूहाम, जिससे
शूहामियों का कुल चला। और दान का कुल यही था। 43और शूहामियों में से जो
गिने गए उनके कुल में चौंसठ हज़ार चार सौ पुरुष थे।
44आशेर के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यिम्ना, जिससे
यिम्नियों का कुल चला; यिश्वी, जिससे यिश्वियों का कुल चला; और बरीआ, जिस
से बरीइयों का कुल चला। 45फिर बरीआ के ये पुत्र हुए; अर्थात् हेबेर, जिससे
हेबेरियों का कुल चला; और मल्कीएल, जिससे मल्कीएलियों का कुल चला। 46और
आशेर की बेटी का नाम सेरह है। 47आशेरियों के कुल ये ही थे; इनमें से तिर्पन हज़ार
चार सौ पुरुष गिने गए।
48नप्ताली के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यहसेल, जिससे
यहसेलियों का कुल चला; और गूनी, जिस से गूनियों का कुल चला: 49येसेर, जिससे
येसेरियों का कुल चला; और शिल्लेम, जिससे शिल्लेमियों का कुल चला। 50अपने
कुलों के अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैंतालीस
हज़ार चार सौ पुरुष थे।
51सब इस्राएलियों में से जो गिने गए थे वे ये ही थे; अर्थात् छः लाख एक

हज़ार सात सौ तीस पुरुष थे।

आयत 1. जब इस्राएल मोआब के अराबा में छावनी किए हुए था तब **यहोवा ने मूसा और एलीआज़ार नामक हारून याजक के पुत्र से बात की**। हारून होर पहाड़ पर मर चुका था और उसके पुत्र एलीआज़ार ने महायाजक के रूप में उसका स्थान लिया (20:23-29)। मिद्यानी लड़कियों के साथ इस्राएल के पाप के परिणामस्वरूप आई **मरी के बाद** परमेश्वर ने मूसा और एलीआज़ार से बात की (अध्याय 25)।

आयत 2. परमेश्वर ने अपने लोगों के प्रधानों को निर्देश दिए कि वे **इस्राएलियों की सारी मण्डली में सभों की गिनती करें**। इस गिनती में **बीस वर्ष के, या उससे अधिक अवस्था के पुरुषों** को शामिल किया जाना था। इस कारण इस गणना में उन सब इस्राएलियों को गिना गया जो **युद्ध करने के योग्य** थे (1:2, 3 पर टिप्पणियाँ देखें)।

आयत 3. इस समय लोग अब भी **मोआब के अराबा में** थे। उनका **यरदन नदी के तट पर** होना यह बताता है कि वे शित्तीम में **यरीहो** के पास की नदी के सामने थे (25:1; 26:63)।

आयत 4. मूसा और एलीआज़ार ने **गिनती करने के लिए** परमेश्वर की आज्ञा लोगों तक पहुँचा दी और अध्याय का शेष भाग इसके परिणाम प्रदान करता है। इस गिनती की जानकारी बहुत अधिक विवरण के साथ दी गई और इस सूची को **मिस्र देश से बाहर निकले हुए इस्राएली** का शीर्षक दिया गया। आगे की आयतों में प्रत्येक गोत्र में परिवारों के मुखिया का नाम बताया गया है और प्रत्येक गोत्र के लिए गिनती किए गए पुरुषों की कुल संख्या दी गई है।

आयतें 5-7. पहली गणना के समान (1:20, 21), **इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र रूबेन** के गोत्र को सबसे पहले सूचीबद्ध किया गया। फिर भी, रूबेन के पाप के कारण (उत्पत्ति 35:22; 49:3, 4), नेतृत्व का विशेष अधिकार यहूदा पर स्थानान्तरित कर दिया गया (2:10, 11 पर टिप्पणियाँ देखें)। रूबेन के परिवार, **हनोकीय** गोत्र, **पल्लुआयी** गोत्र, **हेस्रोनीय** गोत्र **और** कर्मीय गोत्र को शामिल करते थे। उनकी कुल संख्या **तैंतालीस हजार सात सौ तीस** दी गई है।

आयतें 8-11. रूबेनियों के गोत्र से कुछ वंशजों का वर्णन नाम के साथ किया गया है। **पल्लू का पुत्र एलीआब** [था], जिसके **पुत्र नमूएल, दातान, और अबीरम थे**। बाद के दो नाम, दातन और अबीरम हम परिचित हैं क्योंकि उन्होंने जंगल में **कोरह के दल के साथ मूसा और हारून से झगड़ा किया था**। यह पाठ्य याद दिलाता है कि **जब आग ने दो सौ पचास मनुष्यों को भस्म किया तब धरती ने मुंह खोलकर कोरह और उसके दल-बल को निगल लिया और वे मर गए** (16:1-35)। आगे यह नोट किया गया कि ये लोग इस्राएल के लिए **चेतावनी-चिह्न बन गए** और **… कोरह के पुत्र नहीं मरे थे**। बाद में, कोरह के कुछ वंशज मन्दिर के द्वारपाल रहे। (1 इतिहास 9:19; 26:1, 19), जबकि अन्य लोग मन्दिर में गायक बन गए - जिसमें हेमान और उसके पुत्र प्रमुख हैं (1 इतिहास 6:33-38; 15:16, 17;

16:41, 42; 25:1, 4, 5)। अनेक भजनों के उच्च लेखनों में कोरह के पुत्रों के बारे में बताया गया है (भजन 42; 44-49; 84; 85; 87; 88)।

आयतें 12-14. आगे अपने-अपने गोत्र के अनुसार **शिमोन के पुत्रों** को सूचीबद्ध किया गया है। इन वंशजों में **नमूएलियों**, **यामीनियों**, **याकीनियों**, **जेरहियों** और **शाऊलियों** के कुल शामिल थे। **शिमोनियों** की संख्या **बाईस हजार दो सौ** थी, जो इस बिन्दु पर इसे सबसे छोटा गोत्र बनाती थी जबकि निर्गमन (26:51 पर टिप्पणियाँ देखें) के समय यह संख्या में एक बड़ा गोत्र था।

आयतें 15-18. अपने-अपने गोत्र के अनुसार, **गाद** के वंशज, **सपोनीय कुल**, **हग्गीय कुल**, **शूनीय कुल**, **आज्नीय कुल**, **एरीय कुल**, **अरोदीय कुल**, और **अरएलीय कुल** थे। इन गोत्रों के सदस्यों की कुल संख्या **चालीस हजार पांच सौ** थी। (सूची में गाद का पूर्व का स्थान देखने के लिए 1:20-43 पर टिप्पणियाँ देखें।)

आयतें 19-22. यहूदा के पुत्र एर और ओनन थे परन्तु **कनान देश में** उनकी **मृत्यु हो गई**। वास्तव में उनकी मृत्यु के विवरण के बारे में हम जानते हैं। यहूदा का पहिलौठा पुत्र एर था जो तामर का पति था और अपनी दुष्टता के कारण परमेश्वर के द्वारा मार डाला गया (उत्पत्ति 38:6, 7; 1 इतिहास 2:3)। ओनन भी इसी प्रकार मार डाला गया क्योंकि अपने भाई की विधवा के प्रति ठहराई गई ज़िम्मेदारी को पूरा करने में वह असफ़ल रहा (उत्पत्ति 38:8-10)। **अपने गोत्रों के अनुसार यहूदा के पुत्र, शेलीय गोत्र, पेरेसीय गोत्र** और **जेरहीय गोत्र** थे। शेलीय गोत्र के लोग शेला से थे जो यहूदा का तीसरा पुत्र था जिसे उसने तामर को नहीं दिया (उत्पत्ति 38:11)। पेरेसीय और जेरहीय गोत्र के लोग पेरेस और जेरह के वंशज थे जो तामर के जुड़वा पुत्र थे जिन्हें उसने युक्ति करते हुए ठहराई गई ज़िम्मेदारी को यहूदा से पूरा करवाते हुए जन्म दिया (उत्पत्ति 38:12-30)। नाम के अनुसार सूचीबद्ध गोत्रों में **पेरेस के पुत्रों** के नाम हैं जिनसे **हेस्रोनीय गोत्र** और **हामूलीय गोत्र** निकले। **यहूदा** के वंशज एक विशाल गोत्र में आते थे जो गणना में **छिहत्तर हजार पांच सौ** लोग थे।

आयतें 23-25. यहाँ पर इस्साकार के चार कुलों के नाम दिए गए हैं: **तोलीय कुल, पूवीय कुल, याशूबीय कुल और शिम्रोनीय कुल।** उनकी संख्या **चौंसठ हजार तीन सौ** थी।

आयतें 26, 27. जबूलून के पुत्रों के नाम **सेरेदीय कुल, एलोनीय कुल और यहलेलिय कुल** के रुप में सूचीबद्ध किया गया। गणना में इस गोत्र की संख्या **साठ हजार पांच सौ** थी।

आयतें 28-34. यूसुफ के दो पुत्र **मनश्शे और एप्रैम** थे और आगे उनके गोत्रों को सूचीबद्ध किया गया है (26:51 पर टिप्पणियाँ देखें)। मनश्शे का पुत्र **माकीर** था जो **गिलआद** का पिता था। आगे **गिलआदीय गोत्र** की सूची भी देखने को मिलती है जो **ईआजरीय** गोत्र, **हेलकीय** गोत्र, **असरीएलीय** गोत्र, **शेकेमीय** गोत्र, **शमीदीय** गोत्र और **हेपरीय** गोत्र को प्रस्तुत करती है। हेपरीय गोत्र में **सलोफाद** और उसकी पुत्रियाँ थीं जिन्हें 27 और 36 अध्यायों में प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया है। गणना के अंकों में **मनश्शे** के गोत्र ने **बावन हजार सात सौ** की संख्या का जोड़

प्रदान किया।

आयतें 35-37. गणना में यूसुफ का दूसरा पुत्र भी प्रमुख संख्या प्रदान करता है। **एफ्रइम** के पुत्र थे जिनसे **शूतेलहीय** गोत्र, **बेकरीय गोत्र निकला** और **तहनीय गोत्र** निकले। फिर से, अगली पीढ़ी का नाम दिया गया, अर्थात **शूतेलह** के पुत्र से **एरनीय गोत्र** निकला। इस गोत्र के सदस्यों की **संख्या बत्तीस हजार पांच सौ** थी।

आयतें 38-41. बिन्यामिन के पुत्र, **बेलीय** कुल, **अश्बेलीय कुल**, **अहीरमीय** कुल, **शपूपमीय कुल** और **हूपमीय कुल** को सम्मिलित करते थे। हमें बताया गया कि **बेला के पुत्र अर्द और नामन** थे, जिनके अपने गोत्र थे। बिन्यामिन गोत्र में **पैंतालीस हजार छ: सौ सदस्य** थे।

आयतें 42, 43. दान, एक गोत्र अर्थात **शूहमीय** गोत्र का पूर्वज था। इस्राएली जाति के **चौंसठ हजार चार सौ** सदस्यों के रूप में उनकी गिनती की गई।

आयतें 44-47. आशेर के कुल में **यिम्नीय कुल**, **यिश्रियह् कुल और बरीआयी कुल** शामिल थे। इसके साथ ही हमें बताया गया कि **बरीआ के पुत्रों** के नाम **हेबर** और **मल्कीएल** था और **आशेर की** पुत्री का नाम **सोरह** था। सामान्यता ये सूचियाँ पुत्रियों का नाम नहीं बताती। सोरह कोई प्रमुख महिला रही होगी क्योंकि उसका नाम उत्पत्ति 46:17 और 1 इतिहास 7:30 में भी देखने को मिलता है। आशेर के गोत्र में जिनकी **गणना** की गई वे संख्या में **तिरेपन हजार चार सौ** थे।

आयतें 48-50. अन्त में, **नफ्ताली के पुत्रों** को सूचीबद्ध किया गया: **यहसेलिय कुल, गूनीय** कुल, **येसेरिय कुल और शिल्लेमीय** कुल। इन गोत्रों की कुल संख्या **पैंतालीस हजार चार सौ** थी।

आयत 51. सब गोत्रों को एक साथ मिलाने पर **इस्राएली पुरुषों की कुल संख्या छ: लाख एक हजार सात सौ तीस** थी।

आगे के पृष्ठ पर दी गई सारणी गोत्रों के नाम, दोनों जनगणना की कुल संख्या और साथ ही पहली और दूसरी जनगणना के बीच बढ़ता या घटता प्रतिशत प्रस्तुत करती है। प्रथम जनगणना की जानकारी के विवरण में (1:4-15) प्रत्येक गोत्र के प्रधानों के नाम बताए गए। ऊपरी तौर पर इन पुरुषों ने जनगणना करने में मूसा और हारून की सहायता की। दूसरी जनगणना में इन प्रधानों को सूचीबद्ध नहीं किया गया जो यह साक्ष्य उपलब्ध करवाता है कि पुरानी पीढ़ी समाप्त हो चुकी थी।

जैसा कि यूसुफ के दो पुत्रों का स्थान बदल दिया गया उन्हें छोड़ दोनों ही विवरणों में गोत्रों को समान क्रम में सूचीबद्ध किया गया। जहाँ अध्याय 1 में एप्रैम का नाम मनश्शे से पहले आता है वहीं अध्याय 26 में मनश्शे का नाम एप्रैम से पहले आता है। मनश्शे बड़ा पुत्र था परन्तु यूसुफ ने एप्रैम को बड़ी आशीष दी (उत्पत्ति 48:8-22)।

गणना की कुल संख्या प्रकट करती है कि परमेश्वर अपने लोगों को आशीष दे रहा है[1]

गोत्र	*प्रथम गणना*	*द्वितीय गणना*	*% परिवर्तन*
रूबेन	46,500	43,730	-6.0
शिमोन	59,300	22,200	-62.6
गाद	45,650	40,500	-11.3
यहूदा	74,600	76,500	+2.6
इस्साकार	54,400	64,300	+18.2
जबूलून	57,400	60,500	+5.4
एप्रैम	40,500	32,500	-19.8
मनश्शे	32,200	52,700	+63.7
बिन्यामीन	35,400	45,600	+28.8
दान	62,700	64,400	+2.7
आशेर	41,500	53,400	+28.7
नप्ताली	53,400	45,400	-15.0
कुल	603,550	601,730	-0.3

पहली जनगणना से अगली जनगणना के मध्य प्रत्येक गोत्र की संख्या में अन्तर है - कहीं पर यह अन्तर बहुत अधिक है परन्तु फिर भी कुल संख्या में बहुत कम परिवर्तन ही देखने को मिलता है। उन अन्तरों के लिए कोई कारण नहीं दिया गया है। यह अनुमान लगाया गया कि रूबेन और शिमोन के गोत्रों की हानि के लिए रूबेनवाले कुल दातान और अबीराम के विद्रोह को (अध्याय 16; 17) और शिमोनवाले कुल जिम्री के हठीले पाप को (अध्याय 25) ज़िम्मेदार माना जा सकता है।

जनगणना का कारण (26:52-56)

52फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 53"इनको, इनकी गिनती के अनुसार, वह भूमि इनका भाग होने के लिये बाँट दी जाए। 54अर्थात् जिस कुल में अधिक हों उनको अधिक भाग, और जिसमें कम हों उनको कम भाग देना; प्रत्येक गोत्र को उसका भाग उसके गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए। 55तौभी देश चिट्ठी डालकर बाँटा जाए; इस्राएलियों के पितरों के एक एक गोत्र का नाम, जैसे जैसे निकले वैसे वैसे वे अपना अपना भाग पाएँ। 56चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो, जो जो भाग बाँटे जाएँ वह चिट्ठी डालकर बाँटे जाएँ।"

आयतें 52, 53. जिस समय इस गिनती ने उन लोगों की संख्या उपलब्ध करवाई जिन्हें हम "मसौदे के लिए योग्य" के रूप में बता सकते हैं अर्थात - वे लोग

जो कनान में युद्ध करने के योग्य थे - (26:2; देखें 1:2, 3) - साथ ही यह गणना करने का अन्य कारण इसी भाग में बताया गया है। दूसरी जनगणना की संख्या यह निश्चित करने के लिए प्रयोग में ली जानी थी कि **भूमि** को **एक भाग के रूप में** किस प्रकार **बाँटा जाना चाहिए।**

आयत 54. जिन कुलों की गिनती की गई उन्हें उनके आकार के अनुसार भूमि में **अधिक भाग** अथवा **कम भाग** दिया जाना था। **जिस कुल में अधिक लोग हों** उन्हें भूमि का अधिक भाग दिया जाना था और **जिस कुल में कम लोग हों** उन्हें कम भाग दिया जाना था।

आयत 55. कुलों के बीच भूमि किस प्रकार बाँटी जाए इसके लिए अधिक सूचना उपलब्ध करवाई गई। प्रभु ने कहा, **"देश चिट्ठी डालकर बाँटा जाए।"** उनका भाग उनके **पितरों के एक एक गोत्र का नाम, जैसे जैसे निकले वैसे वैसे** बाँटा जाना था।

आयत 56. चिट्ठी डालकर बाँटे जाने से यह निश्चित किया जा सकता था कि **बहुतों के भाग** में और **थोड़ों के भाग में** भूमि को किस प्रकार **बाँटा गया।** बाइबल के समय में "चिट्ठी" का प्रयोग किया जाना, वर्तमान में किसी टोपी में से नाम निकालने, सिक्का उछालने या तिल्ली खींचने जैसे अभ्यास हैं। हम यह कहेंगे कि इस प्रकार की किसी भी प्रक्रिया का परिणाम मात्र संयोग के द्वारा ही निश्चित किया जाएगा। इस्राएलियों के लिए परमेश्वर के द्वारा परिणाम निश्चित किया जाता था (देखें लैव्य. 16:7-10; यहोशू 7:14; 1 शमूएल 14:42; 10:20, 21; 1 इतिहास 24:5; 25:8)। इस्राएल के द्वारा चिट्ठी के प्रयोग की पहचान "सामान्य रूप से परमेश्वर की इच्छा की खोज करने के एक निश्चित तरीके के रूप में की जाती थी (नीति. 16:33; 18:18)।"[2] इसके पीछे का विचार शायद यह था कि भूमि को बड़े और छोटे क्षेत्रों में बाँटा जाए और "जिस कुल में अधिक लोग हों" और "कम लोग हो" उनमें बाँटा जा सके। भूमि का वितरण एक सही तरीके से करने की कल्पना करना भी कठिन था जिस पर इस्राएली स्वामित्व पाने वाले थे।

इन निर्देशों ने इस्राएलियों को अवश्य ही उत्साहित किया होगा जो यरदन के निकट छावनी किए हुए थे। इन्होंने आश्वासन दिया कि वास्तव में इस्राएल नदी को पार करेगा और उस देश पर स्वामित्व लेगा जिसके लिए परमेश्वर ने उनसे वायदा किया था।

लेवियों की गिनती किया जाना (26:57-62)

57फिर लेवियों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गए वे ये हैं; अर्थात् गेर्शोनियों से निकला हुआ गेर्शोनियों का कुल; कहात से निकला हुआ कहातियों का कुल; और मरारी से निकला हुआ मरारियों का कुल। 58लेवियों के कुल ये हैं; अर्थात् लिब्नियों का, हेब्रोनियों का, महलियों का, मूशियों का, और कोरहियों का कुल। और कहात से अम्राम उत्पन्न हुआ। 59और अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद है, वह लेवी के वंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में उत्पन्न हुई थी; और वह

अम्राम से हारून और मूसा और उनकी बहिन मरियम को भी जनी। [60]और हारून से नादाब, अबीहू, एलीआज़ार, और ईतामार उत्पन्न हुए। [61]नादाब और अबीहू उस समय मर गए थे, जब वे यहोवा के सामने ऊपरी आग ले गए थे। [62]सब लेवियों में से जो गिने गये, अर्थात् जितने पुरुष एक महीने के या उससे अधिक आयु के थे, वे तेईस हज़ार थे; वे इस्राएलियों के बीच इसलिये नहीं गिने गए, क्योंकि उनको देश का कोई भाग नहीं दिया गया था।

आयत 57. यह अध्याय आगे **लेवियों** के प्राथमिक विभाजनों की गिनती के बारे में बताता है: **गेर्शोनियों** का कुल, **कहातियों का कुल** और **मरारियों का कुल** (देखें अध्याय 4)। जब पहली जनगणना हुई तब लेवियों को उसमें से अलग कर दिया गया (1:47-54), जबकि बाद में एक अलग गणना में उनकी गिनती की गई (3:14-39)। गिनती 26 में, फिर भी, जबकि उनकी गिनती अलग से की गई थी तब उसी सन्दर्भ में उन्हें शेष इस्राएलियों के रूप में बताया गया।

आयत 58. एक आरम्भिक वंशावली को यहाँ पर शामिल किया गया जो मूसा और हारून के पूर्वजों की, उनकी माता और लेवियों के अन्य वंशजों की सूची प्रदान करती है। इनके कुलों में से एक **लिब्नियों का कुल** था जो गेर्शोन के पुत्र लिब्नी से निकले थे और **हेब्रोनियों का** कुल था जो कहात के एक पुत्र हेब्रोन से निकले थे। **महलियों का** कुल और **मूशियों का** कुल मरारी के दो पुत्र महली और मूशी के वंश से थे। **कोरहियों का कुल कहात के पुत्र** यिसहार के पुत्रों में से एक कोरह की पीढ़ी से थे (निर्गमन 6:16-21; गिनती 3:18-20)।

आयत 59. यहाँ पर मूसा और हारून के निकट परिवार को सूचीबद्ध किया गया है: **अम्राम** और **योकेबेद**, इनके माता पिता थे और **उनकी बहिन मरियम** थी। यह नोट किया गया कि योकेबेद **लेवी के वंश की थी** और उसका जन्म **... मिस्र देश में** (देखें निर्गमन 2:1; 6:20) हुआ था।

आयतें 60, 61. यहाँ पर पाठ्य हारून के पुत्र **नादाब** और **अबीहू** के बारे में और उनके दुखद अन्त के बारे में बताता है। वे मार डाले गए क्योंकि याजक के रूप में **वे यहोवा के सामने ऊपरी आग ले गए थे** (लैव्य. 10:1, 2)।

आयत 62. यहाँ पर जनगणना के परिणाम दिए हुए हैं। सब लेवियों में से **एक महीने के या उससे अधिक आयु के** पुरुष थे जिनकी गिनती की गई। हालांकि लेवियों की गिनती की गई फिर भी अन्य गोत्रों की तुलना में उनके साथ अलग प्रकार से व्यवहार किया गया। अन्य इस्राएलियों के समान उन्हें भूमि में से कुछ लेना नहीं था (18:20)। इसके स्थान पर परमेश्वर के प्रति इस्राएल के द्वारा लाए गए दशमांश और भेटों के द्वारा उनका भरण पोषण किया जाना था। प्रथम जनगणना (3:39) में बाईस हज़ार लोगों की तुलना में, दूसरी जनगणना में लेवियों की संख्या **तेईस हज़ार** थी। बाइबल सम्बन्धी पाठ्य इस वृद्धि का कोई विशेष महत्व प्रस्तुत नहीं करता।

परमेश्वर अपने वायदे पूरे करता है (26:63-65)

[63]मूसा और एलीआज़ार याजक जिन्होंने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर इस्राएलियों को गिन लिया, उनके गिने हुए लोग इतने ही थे। [64]परन्तु जिन इस्राएलियों को मूसा और हारून याजक ने सीनै के जंगल में गिना था, उनमें से एक भी पुरुष इस समय के गिने हुओं में न था। [65]क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा था, "वे निश्चय जंगल में मर जाएँगे।" इसलिये यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उनमें से एक भी पुरुष नहीं बचा।

आयतें 63-65. गिनती किए जाने के महत्व को नोट करते हुए एक कथन के साथ अध्याय 26 समाप्त होता है। यह घोषणा करने के बाद कि **मूसा और एलीआज़ार** ने **मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर इस्राएलियों को गिन लिया**, यह पद इस बात पर बल देता है कि पहली जनगणना में जिन लोगों की गिनती की गई उनमें से **कालेब और ... यहोशू** को छोड़ एक भी व्यक्ति को शामिल नहीं किया गया।

इस बिन्दु तक अब भी मूसा जीवित है। (दो लोगों के अतिरिक्त) पुरानी पीढ़ी समाप्त हो जाने के कथन के प्रति उसकी उपस्थिति को स्पष्ट रूप से अधिकता के साथ एक अपवाद के रूप में सोचा गया कि लेखक ने उसके बारे में बताने की आवश्यकता महसूस नहीं की। फिर भी, जैसा कि मूसा एक लेवी था, इसलिए **सीनै के जंगल में** प्रथम जनगणना में छः लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास लोगों की संख्या में वह शामिल नहीं किया गया। इस कारण वह वास्तव में 26:64, 65 में दिए कथन के प्रति वास्तव में एक अपवाद नहीं था।

परमेश्वर ने वही किया जैसा उसने वायदा किया था: वह अपने लोगों को जो पापमय पीढ़ी की सन्तान थे उन्हें वायदे के देश में ले आया और उसने सब विद्रोहियों को **जंगल में मार** डाला। दो महान सच्चाइयाँ इस्राएल के लिए स्पष्ट रही होंगी और ये हमारे लिए भी स्पष्ट हों: परमेश्वर अपने वायदे पूरे करता है और मनुष्य दण्डमुक्ति के साथ परमेश्वर के विरुद्ध बलवा नहीं कर सकता।

अनुप्रयोग

पापी और उनके परिवार (अध्याय 26)

जब कोरह, दातान और अबीराम ने परमेश्वर के द्वारा नियुक्त अगुवों के विरुद्ध बलवा किया (अध्याय 16), तब दातान और अबीराम की सन्तान नष्ट हो गई। परमेश्वर ने ऐसा किया कि पृथ्वी ने अपना मुँह खोलकर उनके परिवारों को निगल लिया (16:23-33; देखें 26:9, 10)। फिर भी, हम पढ़ते हैं कि "कोरह के पुत्र नहीं मरे थे" (26:11)। क्यों? किसी को मालूम नहीं है। शायद दातान और अबीराम के परिवारों ने मूसा और हारून के अधिकार को नीचा करने के लिए दो विद्रोहियों

के साथ षड्यन्त्र रचा जबकि कोरह के पुत्र अपने पिता के विद्रोह में उसके साथ नहीं गए।

कोरह के पुत्रों के जीवित रहने का तथ्य यह विवरण देता है कि पुराने नियम में "पितरों का दण्ड" सदैव उनके बेटों, पोतों, और परपोतों पर नहीं आता (देखें निर्गमन 20:5)। कोरह के वंशज मन्दिर के संगीतकार बन गए और उन्होंने अनेक भजन लिखे। इस परिवार से हम सीख सकते हैं कि यह आवश्यक नहीं है कि माता पिता का पाप पुत्र (अथवा पुत्री) को परमेश्वर के उपयोगी सेवक बनने से रोके रखे।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता (अध्याय 26)

जंगल के युग की कठिनाइयों और इस्राएल के निरन्तर पाप करने के बाद भी पहली जनगणना के समान दूसरी जनगणना में लोगों की कुल संख्या लगभग समान ही रही। इस छोटे परिवर्तन ने इस्राएल को परमेश्वर की भलाई, अनुग्रह और महानता की गवाही दी। परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देने के लिए भला बना रहा, इतना अनुग्रहकारी रहा कि जब जब उन्होंने पाप किया तब तब उसने उन्हें क्षमा किया और उन्हें वायदे के देश में लाने में आने वाली विकट बाधाओं पर भी जय पायी।

ब्रान्ट ली डोती जैसे अन्य लोगों ने नोट किया कि गिनती में दिए गए आँकड़े परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति अद्भुत देखभाल की गवाही देते है:

> छः लाख एक हज़ार सात सौ तीस की एक विशाल कुल संख्या एक हज़ार आठ सौ बीस की एक लघु हानि को प्रकट करती है - इस पर ध्यान देने पर एक असाधारण सच्चाई देखने को मिलती है कि निर्गमन के समय बीस वर्ष से अधिक के लोग अब तक मर चुके थे और एक विषम भूभाग से होते हुए इस प्रकार के एक कठिन जीवन से होकर वे लोग निकले थे। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के हाथ ने उन्हें अगुवाई दी और एक अद्भुत तरीके से उन्हें आशीष दी।[3]

डब्ल्यु. एच. बेलिन्गर, जुनियर ने यह भी कहा, "गिनती की पुस्तक में वर्णन की गई यात्रा की कठिनाइयों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इसमें प्राप्त संख्या परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और प्रबन्धन के प्रति एक असाधारण गवाह है।"[4]

समाप्ति नोट

[1]यह सारणी जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती: द थर्ड एण्ड फोर्थ बुक्स आफ मोजेज* (एबीलीन, टेक्ससः ए.सी.यू. प्रेस, 1987), 501. से ली गई है. [2]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 191. [3]ब्रान्ट ली डोती, *द बुक ऑफ़ गिनती*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक्स सीरीज़ (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1973), 288. [4]डब्ल्यु. एच. बेलिंगर, जुनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, न्यु इन्टरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पीबॉड़ी, मैसाचुसेट्स: हेन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 2001), 280.